संपादकीय

प्रिय पाठको! हम कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर का आत्मसंयम से दृढ़तापूर्वक सामना कर रहे हैं। इस संकट की घड़ी में प्रत्येक देशवासी अपने उत्तरदायित्वों एवं कर्त्तव्यों का गंभीरतापूर्वक निर्वहन कर रहा है। इन विपरीत परिस्थितियों में शिक्षा व्यवस्था भी अपने दायित्वों का बड़ी ज़िम्मेदारी से निर्वहन करते हुए प्रत्येक व्यक्ति को जागरूक एवं शिक्षित करने में जुटी है। हमने 12 मार्च को गांधीजी के आज़ादी के आंदोलन को याद करते हुए उनकी दांडी यात्रा की वर्षगांठ मनाई तथा इसी दिन से देश भर में 'आज़ादी के अमृत महोत्सव' का प्रारंभ किया, जो 15 अगस्त, 2023 तक चलेगा। इस अमृत महोत्सव में सभी विद्यालय एवं शैक्षिक संस्थान जुड़कर आज़ादी से जुड़ी 75 घटनाओं का विविध रूप में संकलन, प्रदर्शन तथा विस्तार देंगे। इस प्रक्रिया से विद्यार्थियों एवं युवाओं को हमारे अतीत से सीखने का अवसर मिलेगा। क्योंकि उन्हें ही देश के भविष्य के निर्माण की ज़िम्मेदारी उठानी है।

इस अंक की शुरुआत भी हम आज़ादी से जुड़ी घटनाओं पर आधारित शोध पत्र से करते हैं। शोध पत्र 'यादों में बसा सेवाग्राम' एथनोग्राफ़िक शोध के अंतर्गत आनंद निकेतन विद्यालय, सेवाग्राम के पूर्व विद्यार्थियों (पुराविद्यार्थियों) की विद्यालय स्मृतियों को आधार बनाकर नई तालीम के सिद्धांत पर आधारित अधिगम-संस्कृति की व्याख्या को प्रस्तुत करता है।

शिक्षा एवं समाज को वास्तविक परिस्थितियों से अवगत करने एवं सार्थक रास्ता दिखाने में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है, जिसमें एक विधा उपन्यास भी है। अतः लेख 'हिंदी उपन्यासों की दृष्टि से शिक्षक की समाज में भूमिका' में हिंदी उपन्यासों के माध्यम से वर्तमान शिक्षक की विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास तथा उसे एक ज़िम्मेदार नागरिक बनाने के दायित्वों पर चर्चा की गई है।

वहीं साहित्य की दूसरी विधा काव्य है। इसी विधा को आधार बनाते हुए लेख 'आधुनिक काव्य खंड का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण— कक्षा 11 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *अंतरा* के संदर्भ में' दिया गया है। जो किशोर विद्यार्थियों के संदर्भ में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

इसी प्रकार किशोर विद्यार्थियों के विविध संदर्भों पर आधारित लेख '*चमन बहार* फ़िल्म में प्रदर्शित ग्रामीण किशोरों के विविध संदर्भ' दिया गया है। यह लेख ग्रामीण किशोरावस्था के सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाश डालता है।

ग्रामीण परिवेश में विद्यार्थी अपने परिवार के साथ मिलकर विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में जुड़कर सीखता है। इसी दृष्टिकोण पर आधारित शोध पत्र 'ग्रामीण विद्यार्थियों की विद्यालयेत्तर अधिगम पारिस्थितिकी' दिया गया है।

विद्यार्थियों में मानवीय मूल्य विकसित करने तथा एक ज़िम्मेदार नागरिक बनाने के दायित्व के साथ उनका सर्वांगीण विकास करने में अध्यापक का पेशेवर रूप से योग्य एवं दक्ष होना आवश्यक है। जो सार्थक एवं गहन अध्यापक शिक्षा या प्रशिक्षण से संभव हो सकता है। इसी से जुड़ा लेख 'चार वर्षीय

एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम— उद्भव से अब तक' इस अंक में शामिल किया गया है। इस लेख के माध्यम से हमारे देश में स्वतंत्रता के बाद चार वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (विशेष कर माध्यमिक शिक्षा के लिए) के उद्भव तथा उसकी गुणवत्ता, विश्वसनीयता एवं सफलता को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

हम शिक्षा प्राप्त करने के औपचारिक केंद्र के रूप में विद्यालय के बारे में जानते हैं। लेकिन हमारी शिक्षा व्यवस्था में वैकल्पिक विद्यालय भी हैं। वैकल्पिक विद्यालयों के अध्यापकों से जुड़े वृत्तिक विकास पर आधारित शोध पत्र 'वैकल्पिक विद्यालयों के अध्यापकों के वृत्तिक विकास का अध्ययन' दिया गया है।

शिक्षा, अध्यापक एवं समस्त शैक्षिक व्यवस्था का यह प्रयास रहता है कि विद्यार्थी के मज़बूत पक्षों एवं कमज़ोर पक्षों की पहचान कर उसे सार्थक शिक्षा प्रदान की जाए। विद्यार्थी का संकोचित होना एक कमज़ोर मनोवैज्ञानिक लक्षण है। इसी लक्षण पर आधारित शोध पत्र 'विद्यार्थियों की संकोच प्रवृत्ति दूर करने में व्यक्तिगत समुपदेशन का प्रभाव' प्रस्तुत किया गया है।

विद्यार्थी की क्षमता के अनुसार सार्थक शिक्षा प्रदान करने में खेलों का महत्वपूर्ण योगदान है। इसी महत्व को लेख 'विद्यालयी शिक्षा में खेल-समन्वय अधिगम की भूमिका' दिया गया है। जिसमें स्थानीय खेलों सहित विविध शारीरिक गतिविधियों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं से जोड़ने पर बल दिया गया है।

विद्यार्थियों के अधिगम का आकलन एवं मूल्यांकन विद्यार्थियों सहित शिक्षा व्यवस्था में भी सुधार का मार्गदर्शन प्रदान करता है। इसी परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा में मूल्यांकन सुधारों पर शोध पत्र 'उच्च शिक्षा स्तर पर मूल्यांकन सुधारों के प्रति अध्यापकों का प्रत्यक्षण' दिया गया है।

कोविड-19 महामारी के दौरान शिक्षा व्यवस्था ऑनलाइन हो गई है। अतः ऑनलाइन शिक्षा के अनुभवों को शोध पत्र 'कोविड-19 महामारी के दौरान गुजरात के ज्ञानकुंज प्रोजेक्ट की भूमिका का अध्ययन' में प्रस्तुत किया गया है। जो गुजरात राज्य में 2016 से प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में क्रियान्वित डिजिटल शिक्षा के ज्ञानकुंज प्रोजेक्ट के शोध अध्ययन पर आधारित है।

इस अंक के अंत में एक पुस्तक समीक्षा प्रस्तुत की गई है। यह पुस्तक समीक्षा '*मैं सीखता हूँ बच्चों से जीवन की भाषा*' पुस्तक पर आधारित है, जो शिक्षा के विभिन्न आयामों को समेटते हुए विद्यालय जीवन के वास्तविक अनुभवों को काव्य रूप में गढ़ी गई सत्तर कविताओं की एक काव्य मंजूषा है। इसमें बच्चों और अध्यापकों के नज़रिए को व्यक्त करते हुए निर्माणवादी शिक्षणशास्त्र के व्यावहारिक पक्षों को भी उकेरने की कोशिश की गई है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, शैक्षिक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, विद्यालयों के अनुभव आदि प्रकाशन हेतु आगे दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति

© NCERT not to be republished